

Impact Factor : 2.034

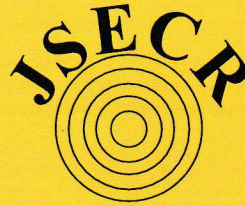
ISSN : 2394-2878

Journal of Socio-Educational & Cultural Research

(An International Interdisciplinary Refereed Journal)
Bi-annual, Bilingual (English/Hindi)

Vol. 2, No. 5

July-December, 2016



Editor in Chief

Dr. Alok Kumar Kashyap

Editor

Dr. Shivam Srivastava

विषय सूची


1.	Multicultural Education in Secondary School: Issues and Challenges in Indian Context Dr. Ajay Kumar Singh & Md. Akhtar Raza	1-6
2.	Attitude of Students Towards Tuition Dr. Alka Rani	7-10
3.	Nehru and Socialistic Pattern of Society: Relevance Dr. Anju Beniwal	11-14
4.	Some Tribes in India: In Recent Scenario Dr. Ramesh Ramrao Bainwad	15-18
5.	A study of role conflict in relation to frustration tolerance of secondary school teachers Dr. Ruchi Agarwal	19-22
6.	An over view of the competencies, required to be a good teacher Dr. Sharad Kumar Agarwal	23-26
7.	Effectiveness of Computer Assisted Instruction for Remedial Teaching of Children with Cognitive Learning Disabilities Dr. Shikha Chaturvedi	27-34
8.	Vocational Interests of student in the Era of Unemployment Dr. Shubhra Ojha	35-38
9.	Open Educational Resources (OER) Dr. Surendra Pal	39-46
10.	Entrepreneurship in Education and Sports Ranadheer Singh	47-50
11.	जनपद अंबेडकर नगर के प्राथमिक विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन योजना के प्रति विभिन्न वर्ग के शिक्षकों एवं अभिभावकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन डॉ० नागेन्द्र कुमार	51-56
12.	डा० भीम राव अम्बेडकर की सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक प्रजातंत्र के संदर्भ में सामाजिक न्याय की वैचारिक अवधारणा धनंजय भारती एवं डा० छाया सोनी	57-62
13.	खाद्य सुरक्षा कानून एवं भोजन का अधिकार (एक समाजवैज्ञानिक विश्लेषण) संजय कुमार पटेल	63-68
14.	लोक संस्कृति (एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण) डॉ० राकेश प्रताप शाही	69-74
15.	महिला सशक्तिकरण एवं स्वयं सहायता समूह: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण रांची जिले के नामकुम प्रखण्ड के विशेष संदर्भ में आभा मिश्रा	75-82

1-6	16. औद्योगीकरण का नगरीय विकास पर प्रभाव: राँची एवं जमशेदपुर नगर के संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन डॉ० रेखा चौधरी	83-88
7-10	17. माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के शारीरिक स्वास्थ्य का अध्ययन डॉ० सुनील कुमार जोशी एवं दीपलता मिश्रा	89-94
11-14	18. ग्रामीण परिवेश की सामाजिक संरचना में परिवर्तन, हरिद्वार जिले के एक गांव का समाजशास्त्रीय अध्ययन डॉ० अमित मलिक	95-96
15-18	19. भारतीय परिदृश्य में महिला सशक्तिकरण की ओर बढ़ते कदम डॉ० दीपा पाठक	97-100
19-22	20. झारखण्ड राज्य में सदानों की सांस्कृतिक स्थिति का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (राँची नगर के संदर्भ में) डॉ० गंगा केवट	101-108
23-26	21. भारत में पर्यावरण सम्बन्धित आन्दोलन और उसमें महिलाओं की भूमिका डॉ० जयदेव	109-112
27-34	22. भारत में आतंकवाद की समस्या डॉ० किशोर उत्तमराव राऊत	113-120
35-38	23. भारतीय महिला उद्यमिता की समस्याएं (पूर्वांचल के विशेष सन्दर्भ में) डॉ० महबूब आलम	121-130
39-46	24. वैश्विक भारत में दलित नारी डॉ० मोहित	131-132
47-50	25. मानवाधिकारवादी शिक्षा की संकल्पना डॉ० शिवम श्रीवास्तव एवं डॉ० नित्या श्रीवास्तव	133-138
51-56	26. स्वतंत्र भारत में शैक्षिक अवसरों की समानता हेतु उठाये गये कदम डॉ. सुनीता गुप्ता	139-144
57-62	27. गया श्राद्ध - कतिपय मिथक एवं उनका प्रत्याख्यान डॉ. विमलेश कुमार पाण्डेय	145-148
63-68	28. भारत में मानवाधिकार की स्थिति और संरक्षण के तन्त्र मनोज कुमार वर्मा	149-152
69-74	29. वैश्वीकरण के दौर में महिला सशक्तिकरण : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रियंका कुमारी	153-158
75-82	30. ग्रामीण भारत में गरीबी व बेरोजगारी निवारण का सषक्त साधन-मनरेगा पूजा पल्लवी	159-162
	31. गोरखपुर मण्डल के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत बी०टी०सी० एवं विशिष्ट बी०टी०सी० प्रशिक्षित अध्यापकों की कार्य संतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन प्रो० (श्रीमती) शोभा गौड़ एवं ऋषिकेश विश्वकर्मा	163-180

संपादकीय

नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ हम मार्टिन लूथर किंग की इस विचारोक्ति को उद्धृत करना चाहेंगे जिसमें उन्होंने कहा था— "हमें सीमित मात्रा में निराशा को स्वीकार करना चाहिए, लेकिन असीमित आशा को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।" बदलते वैश्विक एवं राष्ट्रीय परिदृश्य में हम अनेक आशाओं एवं आशंकाओं के बीच असमंजसपूर्ण स्थिति में आ गए हैं। हम जीवन में हमेशा ही कुछ न कुछ पाना चाहते हैं, हम सबसे सदैव कुछ नया प्राप्त करने का लालसा बना रहती है। अंदर की चाह में नए लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर उन्मुख करती है। इससे मनुष्य निरन्तर कर्मशील और प्रतिपल सक्रिय बना रहता है। जिन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए वह निरन्तर सक्रिय है उनकी प्राप्ति न होने पर या लक्ष्य से चूक जाने पर मनुष्य की कार्यक्षमता एवं आत्मविश्वास में कभी आने लगती है। हम सभी के जीवन में ऐसा समय आता है जब हम खुद को हारा हुआ महसूस करते हैं ऐसे में निराशा के भाव मन में आ जाते हैं। असफलता के कारणों का गहन अवलोकन करें तो पाएंगे कि कहीं न कहीं हमारी पात्रता उस लक्ष्य के लिए सम्यक नहीं थी। यह भी सत्य है कि आपके पास जो कुछ भी है उसके लिए आपमें कहीं न कहीं पात्रता अवश्य है। इसके विपरीत जो आपको प्राप्त नहीं हो सका उसकी पात्रता भी अभी विकसित करनी रह गयी है। कोई वृक्ष उस आकार प्रकार का है यह उस वृक्ष के बीज द्वारा ही निर्धारित होता है। इसीलिए निरन्तर कर्मपथ पर आगे बढ़ते रहना होगा। और अभीष्ट को प्राप्त करने के लिए यह हर हाल में आवश्यक है हम अन्तर्यात्रा करें, भीतर के सच को जाने और अपने अंदर पात्रता विकसित करें। पात्रता विकसित करने के पथ पर सफलता के लिए हमेशा यह सोच कायम रखनी है कि हमे आशाओं को अनन्त पंख देने हैं। रियो ओलम्पिक में भारत के लिए सिल्वर मेडल जीतने वाली पी.वी. सिंधु ने अपने अंदर इस उपलब्धि को अर्जित करने की पात्रता विकसित करने के लिए एड़ी चोटी का जोर अवश्य लगाया था बिल गेट्स दुनिया के सबसे धनवान व्यक्ति इसीलिए बन सके क्योंकि उन्होंने स्वयं को इस योग्य बनाया। लक्ष्य चाहे जो भी पहले उसके लिए पात्रता पैदा करें।

देश इस समय परिवर्तन के दौर में है सरकार हमें कैशलेस बनाने में तुली है। हर ओर जनता में मिली जुली प्रतिक्रिया आ रही है। ज्यादातर देशवासी परिवर्तन के इस दौर में भ्रष्टाचार मिटाने के इस अभियान में स्वयं को कष्ट में रखकर, सरकार का सहयोग कर रहे हैं। कैशलेस होने से एवं कामकाज में प्रौद्योगिकी के पूर्ण प्रयोग से निश्चय ही आमूलचूल परिवर्तन होंगे, पारदर्शिता बढेगी हर लेन देन पारदर्शी होगा। कर चोरी न होने से देश प्रगति की राह पर जायेगा। पर इस सबसे अधिक जरूरी है कि हम सभी देशवासी स्वयं इस ओर अधिक ध्यानपूर्वक विचार करें कि हम अपने आप में कितने अधिक पाक साफ हैं? हम अपने भीतर के सच को अवश्य जानते हैं। अपनी पात्रता को समझते हैं मशीने तो कोई भेदभाव नहीं करती पर क्या हम पूर्ण रूप से स्वयं को समावेशी दृष्टिकोण वाले मनुष्य के रूप में पाते हैं? तो आइये! संकल्पित हों कि महान देश की इकाई के रूप में हम निज पात्रता विकसित करेंगे।


(डॉ० आलोक कुमार कश्यप)
प्रधान सम्पादक


(डॉ० शिवम् श्रीवास्तव)
सम्पादक

Some Tribes in India: In Recent Scenario

Dr. Ramesh Ramrao Bainwad*

Introduction:

There are many views of way of life in India. There is caste system in Hindu society which is not appropriate to the democratic way of social life. Many differences are as caste, creed, religion, race, tribe etc. But in present era it has been seen that the advancement in knowledge, technology, and science. It caused to impact many aspects of Indian life as cultural, political, and economic, etc. It brought dynamic changes in people's life. Indian tribes are not far away from these changes. In this paper is being studied there 'Tribes in India: In Recent Scenario'. The tribal study is very important to establish social justice, equality, and fraternity in India. We study definition of tribes, there cultural identity and scenario. First is the definition of tribes. India has the largest tribal population in the world. About 8.5 crores tribals live over the long corridors of Western, Central and Eastern India. Not only this, India's tribal population constitutes over 8 per cent of Worlds total tribal population of 100 crores and the highest concentration of them are in the States like Jharkhand, Bihar, Carved out of Bihar in Orissa, Chhattisgarh, West Bengal, and Assam.

Meaning of tribes and their cultural identity:

Who are tribals? This is very important to determine because there will be easy to identify them. So a view of the tribe is developmentally or historically, as a social group existing before the development of, or outside, states. A tribe is a group of distinct people, dependent on their land for their livelihood, who are largely self-sufficient, and not integrated into the national society.

Stephen Corry defined tribal people as those who "...have followed ways of life for many generations that are largely self-sufficient, and are clearly different from the mainstream and dominant society."¹ There is an estimated one hundred and fifty million tribal individuals worldwide constituting around forty percent of indigenous individuals. Although nearly all tribal people are indigenous, some are not indigenous to the areas where they now live.

After observing the definition of the tribe one point clearly to be noted that these tribes are different from the urban civil society or main stream in their cultural identity, means of production, sources of product, political culture, technology and understanding. So there one thing should remember the cultural identity. The definition of cultural identity is as following.

Cultural identity is the identity or feeling of belonging to a group. It is part of a person's self-conception and self-perception and is related to nationality, ethnicity, religion, social class, generation, locality or any kind of social group that has its own distinct culture. In this way, cultural identity is both characteristic of the individual but also of the culturally identical group of members sharing the same cultural identity.²

* Assistant Professor & Research Supervisor, Department of political science, Nutan Mahavidyalay, Selu, Dist. Parbhani, Maharashtra, India

Editorial Board

Prof. O.P. Bhartiya (B.H.U.)
Dr. K.U. Raut (Maharashtra)
Dr. V.K. Lahari (B.H.U.)
Dr. Surendra Pal (Muzaffarnagar)
Dr. B.K. Singh (M.G.K.V.P., Varanasi)
Dr. Shikha Verma (Faizabad)

Advisory Board

Prof. S.R. Yadav (B.H.U.)
Prof. R.N. Tripathi (B.H.U.)
Dr. Amita Singh (Varanasi)
Dr. Amita Mohan (U.S.A.)
Dr. B.B. Malik (Lucknow)
Dr. S. Yadav (Faizabad)
Dr. S.K. Pandey (Mugalsarai)
Dr. Aruna Kumari (B.H.U.)
Dr. A.P. Singh (Uttarakhand)
Dr. P.K. Chaudhary (Bihar)
Dr. Vijay Bharti (Varanasi)
Dr. Anita (Varanasi)
Dr. D.K. Singh (Jharkhand)
Dr. A.P. Singh (Jaunpur)
Dr. Rahul Kumar Gupta (Varanasi)
Dr. Jai Prakash Yadav (Varanasi)
Dr. Parul Mishra (Farrukhabad)
Dr. Beerendra Kumar (Kushinagar)

Joint Editor

Dr. Mithilesh Kumar (Ranchi)
Binod Kumar (Dhanupur, Allahabad)

Managing Editor

Dr. Narendra Singh (Lucknow)
Dhananjay Bharti (Varanasi)
Varun Kumar Bhaskar (Varanasi)

Composed by

M. Computer
Kakarmatta, D.L.W., Varanasi
Mob. 8303968456

Office : A-77, Anjanipuram Colony, Karmajitpur, Sunderpur, Varanasi
Cell : 8858229047, E-mail : alokkumar078@gmail.com

© Publisher

1. All views and opinions expressed in 'Journal of Socio-Educational & Cultural Research' are the sole responsibility of the author concerned. Neither the Editor nor Publisher can in anyway, be held responsible for them.
2. All post of journal are without pay.
3. All disputes are subject to Varanasi jurisdiction only.

customary rights of the tribals over resources were to be given. The benefits of large scale of industries and infrastructure, did not reach these tribals. This has contributed to rise of the Naxalite movements as before said. The above policies have also led to the environmental damage and imbalance. This is the social side effects of the development in tribal areas. Earlier, Tribals bring hindrance to development.

Their traditional socio-economic and cultural systems did not fully approved to the general perspectives on development. In the present scenario India where the mining and industrialization in tribal areas is linked with retarded economic performance. Naxalites have hindered both private companies and government institutions. Now tribes have a understanding that democratic way is the best alternative for coming main stream of development.

Forest rights act (2006), any corresponding law for mineral and rights over other kind of resources yet to be formulated. They see it as a "Land Redistribution Exercise". It will be provided a legal right for the communities themselves to protect the forest. The law concerns the rights of forest dwelling communities to land and other resources, denied to them over decades as a result of the continuance of colonial forest laws in India. 'Tribal peoples across India are being illegally evicted from their ancestral homelands in the name of tiger conservation. They're promised alternative land, housing, and money, but these are lies: they often receive little or nothing, and end up living in abject squalor on the edge of their territory'⁵

There are 46 recognized Scheduled Tribes in Madhya Pradesh, India, three of which have been identified as 'Particularly Vulnerable Tribal Groups' (PTGs) (formerly known as 'Special Primitive Tribal Groups'). The population of Scheduled Tribals (ST) is 21.1% of the state population (15.31 million out of 72.62 million), according to the 2011 census.⁶

The Wikipedia has seen the diversity in the tribes across the state-Madhya Pradesh comes from differences in heredity, lifestyle, cultural traditions, social structure, economic structure, religious beliefs and language and speech. Due to the different linguistic, cultural and geographical environments, the diverse tribal world of Madhya Pradesh has been largely cut off from the mainstream of development. 'Face to face contact is the useful method to social change is seen. People do not accept idea immediately as they listen, it takes time. The problem of communication in under developed tribal areas is that of adopting the agents of change, the media of communication and forms and content of communication to the culture, value system, attitudes and overall view of the community. The degree of success will depend upon the workers ability to recognize the exiting channels of communication, to anticipate the culture direct responses of the people and to adopt the method of communication.'⁷ This has been seen the some tribes in India in current scenario.

References:

- > Madhya Pradesh. (2001) *Data highlights: the scheduled tribes, census of India*. Government of Madhya Pradesh: Retrieved on 2010-04-09.

ISSN : 2394-2878

Office :
A-77, Anjanipuram Colony
Karamajitpur, Sunderpur, Varanasi
Cell : 9452130361
E-mail : jsecrsocial@gmail.com
Website : jsecrjournal.com

Printed by :
Mushtaque Computer
Kakarmatta (South), D.L.W., Varanasi
Cell : 9415388337